गर्लफ्रेंड के साथ मेरा पहला सेक्स-2

“वह एक शर्मीली मुस्कुराहट लिए खिंची चली आई। वह भी अब सारी सीमायें तोड़ डालने के लिये उतनी ही उतावली थी जितना कि मैं। उसने अपनी बाहें मेरे गले में पिरो दीं और अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिये। …”

Story By: (sapnapaswan)
Posted: Friday, October 26th, 2018
Categories: पहली बार चुदाई
Online version: गर्लफ्रेंड के साथ मेरा पहला सेक्स-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

गर्लफ्रेंड के साथ मेरा पहला सेक्स-2

कहानी का पहला भाग : गर्लफ्रेंड के साथ मेरा पहला सेक्स-1

> मैंने अपना हाथ उसकी जींस के अंदर कर दिया और उसकी पैंटी के ऊपर से ही उसकी चूत पर फिराने लगा। वह बुरी तरह सिसकारियां भर रही थी। उसकी पैंटी पर गीलापन मेरे हाथ को साफ महसूस हो रहा था।
>
> धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते मेरे होंठ उसकी पैंटी पर आ गये और पैंटी के ऊपर से ही उसकी चूत की गर्माहट महसूस करने लगे। उसके पानी की सुगंध मुझे और मदहोश किये दे रही थी।
> वह अब भी अपनी हथेलियों से अपनी आंखें ढके लेटी हुयी थी। अपने बदन की थरथराहट पर उसका काबू नहीं था।

फिर मैं बेड से नीचे उतर आया और पांयचों से पकड़ कर उसकी जींस खींचने लगा। पर जींस उसकी एड़ी पर चढ़ने में दिक्कत दे रही मैं परेशान था। मेरा अकड़ा हुआ लंड बार बार फनफना रहा था।
“बुद्धू!” अचानक मुझे उसकी फुसफुसाहट सुनाई दी।
यह एक प्रकार से मेरे लिये चैलेंज था। खैर मैं उसकी जींस के पांयचे उसके पैरों से बाहर तक लाने में सफल हो ही गया। उसके बाद तो आसान था। मैं सोच रहा था कि अगर जींस स्टेचेबेल न होती तो वह इसे कैसे पहन पाती ? पर यह सोच अधिक देर तक मुझे परेशान नहीं कर पाई।

मैंने उसके दोनों पैर फैलाये और उनके बीच में आ गया। मेरे बीच में आते ही उसने अपनी

जांघें भींच कर मुझे दबा लिया। उसकी गुदाज संगमरमरी जांघों का मादक स्पर्श मेरे बदन को भी मदमस्त कर रहा था। मेरे भी सारे शरीर में करंट सा बहने लगा था।
मुझे अचानक लगा कि मेरी टी-शर्ट बीच में बाधा बन रही है। इस समय कोई भी बाधा मुझे सहन नहीं थी। मैंने टीशर्ट खींच कर निकाल दी। अब उसकी मस्त जांघों और मेरे कमर के ऊपर के शरीर के बीच कोई दीवार नहीं थी।

मेरी शर्ट हटने का उसे भी अहसास हो गया। मैंने देखा कि वह अपनी उंगलियों की दराजों से झांक कर मेरे बदन को निहार रही है। यह अहसास आते ही मैंने हाथ बढ़ा कर उसकी दोनों हथेलियां काबू में कीं और उसे भी खींच कर बिठा लिया।
वह एक शर्मीली मुस्कुराहट लिए खिंची चली आई। वह भी अब सारी सीमायें तोड़ डालने के लिये उतनी ही उतावली थी जितना कि मैं। उठते ही उसने अपनी बाहें मेरे गले में पिरो दीं और अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिये।

अब मुझे उसका टॉप अखर रहा था। मैंने टॉप का सिरा पकड़ा और ऊपर खींचने लगा। मेरी हरकत देख कर उसने एक बार अपनी बाहें खींच कर अपने सीने पर क्रॉस की तरह से बांध लीं पर अगले ही क्षण मेरी आंखों झांकते हुए मुस्कुराई और बाहें ऊपर उठा दीं।
मैंने उसका टॉप उसके शरीर से अलग कर दिया। अब वह मेरे सामने सिर्फ ब्रा और पैंटी में बैठी हुयी थी।
उसका मरमरी बदन मेरी सहनशक्ति की परीक्षा ले रहा था। मैं अब पूरी तरह उसके भीतर समा जाना चाहता था। मैं अब उसके मादक यौवन में खो जाना चाहता था। उसके मस्त उरोज मेरी उम्मीद से भी कहीं अधिक भरे-हुये और सुडौल थे। मेरी निगाहें उनसे हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं।

अचानक उसने अपनी हथेलियां मेरे सिर के पीछे टिकाईं और मेरा सिर खींचकर अपनी गुदगुदी छाती में भींच लिया।

मैंने भी अपना सिर उसके सीने में धंसा दिया और उसकी गोलाइयों के एक-एक इंच पर अपने होंठों के स्पर्श के सुबूत छोड़ने लगा। मेरी नाक उसके शरीर की मस्त गंध अपने भीतर समेट रही थी। मेरे सारे रोंये खड़े हो गये थे।

मैंने अपना चेहरा उसके बूब्स में धंसाये-धंसाये ही अपने हाथ उसकी पीठ पर फिराना शुरू कर दिया। जाहिर है, मेरी उंगलियों की करामात का अगला स्टेप उसकी ब्रा का हुक ही था। मैंने अपने दोनों हाथ उसकी पीठ पर फिराते-फिराते अंततः उसकी ब्रा की हुक पर अपनी उंगलियां टिका दीं और उससे खेलने लगा। वह चिहुंक उठी, उसके बदन की थरथराहट और बढ़ गयी … और अगले ही पल मेरी उंगलियों ने उसकी ब्रा का हुक खोल दिया और ब्रा के स्ट्रेप उसके कंधे से खींच दिये। अब ब्रा सिर्फ मेरे चेहरे से दबी हुई उसकी छाती से चिपकी हुई थी।

मैंने अपना चेहरा पीछे खींचना चाहा पर उसने उसे और कस कर भींच लिया।
“अरे छोड़ो तो !” मैंने कांपती हुई आवाज में कहा।
“नहीं !” उसकी आवाज मुझसे भी ज्यादा कांप रही थी।
“छोड़ना तो पड़ेगा।”
“नहीं, मुझे शर्म लग रही है।”
“पर इस शर्म में मजा भी तो आ रहा होगा ?”
“हां, सो तो है।” कहते हुए उसने अपनी ठुड्डी मेरे सिर पर टिका दी।
“तो छोड़ो, यह आवरण हटते ही शर्म और बढ़ जायेगी।”
“शर्म बढ़ेगी तो आनंद भी चौगुना हो जायेगा।”
“ऐसा ?” उसने थरथराती हुयी मदहोश सी आवाज में कहा।
“हां, ऐसा !”
“तो लो !!!” उसने झटके के साथ मेरा सिर पीछे खींच दिया।

जन्नत का नजारा मेरे सामने था। मैंने बिना जरा सी भी देर किये उसकी ब्रा से उसके खरबूजों जैसे उरोजों की इच्छा पूरी कर दी। पिंजरे में फड़फड़ाते उन कपोतों को आजाद कर दिया।
ब्रा को हाथों से निकल जाने देने भर के लिये उसने अपनी हथेलियां मेरे बालों से अलग कीं। मैंने ब्रा बेड पर एक तरफ फेंक दी और उतनी देर में ही उसने मेरा सिर फिर से अपनी छाती में भींच लिया। अब मेरे होंठों और उसके निप्पल्स के बीच कोई दीवार नहीं थी। मैंने बेधड़क एक निप्पल को अपने होंठों से दबा लिया। उसे अपने दांतों से चुभलाने लगा … और फिर उसे बिल्कुल किसी बच्चे की तरह चूसने लगा।

मेरे होंठों की हरकत ने उसकी तड़प की आग में घी डाल दिया। उसकी सिसकारियां और तेज हो गयीं। सिसकारियों के साथ ही अब उसके मुंह से आह !! … ऊह !! … ओह !!! की आवाजें भी निकलने लगीं। उसका बदन और जोर से कांपने लगा। मेरे बदन के गिर्द उसकी जांघों का कसाव और बढ़ गया था। वह बार-बार अपनी जांघों को भींच रही थी। अचानक उसका बदन ऐंठने लगा। उसके साथ ही मेरी छाती से लगी उसकी पैंटी का गीलापन मुझे साफ महसूस होने लगा।
उसका बदन कई बार कांपा और फिर उसका कसाव ढीला पड़ गया। उसके चेहरे पर एक संतुष्ट मुस्कुराहट फैल गयी।

“यू नॉटी !!!!” बरबस ही उसके मुंह से कराहटों के स्थान पर ये अलग ही शब्द फूट पड़े। साथ ही उसने अपनी हथेली मेरे ठुड्डी के नीचे लगा कर मेरा चेहरा उठा लिया। जैसे ही मेरी नजर उसकी नजर से मिली, उसकी पूर्ण संतुष्ट मुस्कुराहट शरमा उठी पर उसने अपनी पलकें नहीं गिरायीं। उसकी पलकें, उसकी आंखें, उसके होंठ … उसका पूरा अस्तित्व मुस्कुरा उठा था। वह झुकी और अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिये।
“थैंक्यू !” वह फुसफुसायी।
“अभी से … अभी तो बहुत मजा लेना है।” मैं भी फुसफुसाया।

“तो लो ना ! रोका किसने है ।” वह आनंद से फुसफुसायी ।

लाइन क्लियर थी । मैंने हपने हाथ उसकी पैंटी की इलास्टि पर टिका दिये और अपने अंगूठे पैंटी के अंदर सरक जाने दिये ।
जैसे ही मैंने पैंटी की इलास्टिक खींची, उसने मुस्कुराते हुए अपने पैरों के पंजे मेरी जांघों पर टिकाते हुए अपने नितंब को इतना उचका दिया कि मैं आसानी से उसकी पैंटी खींच सकूं । अगले ही पल उसकी पैंटी भी उसके शरीर से दूर पड़ी थी । अब वह मेरी आंखों के सामने पूरी तरह से निर्वस्त्र थी । कपड़ों के नाम पर एक धागा भी उसके शरीर पर नहीं था । पर इस प्रक्रिया में मुझे उसकी जांघों के बीच से हटना पड़ा था । मेरे हटते ही उसने झट अपनी जांघें सिकोड़ दीं । स्वर्ग का द्वार उसकी जांघों के बीच में छुप गया ।

मैंने उसकी हरकत को देखा और मुस्कुरा दिया ।
वह शर्मा गयी … उसने अपनी बाहें क्रॉस करते हुए अपनी छाती पर बांध लीं ।
मैं बरबस हंस पड़ा ।
उसकी शर्म और बढ़ गयी पर फिर भी उसने अपनी आंखें मेरी आंखों से नहीं हटायीं ।

मैं खड़ा हो गया । मैंने अपनी हथेलियों से उसकी हथेलियां थाम लीं । अब मेरी हथेलियां उसके बूब्स और उसकी हथेलियों के बीच थीं । उसके कठोर निप्पल्स मेरी हथेलियों के पृष्ठ भाग को चूम रहे थे ।
मैंने उसकी हथेलियां पकड़ कर खींचीं । यह उसके लिये उठने का इशारा था । उसने भी इशारा समझने में देर नहीं की और खड़ी हो गयी । खड़ा होने के साथ ही वह मुझसे लिपट गयी । उसकी पूरी तरह नंगी, मदमस्त जवानी मेरे बदन से लता की भांति लिपटी हुयी थी ।

हमारे होंठ एक बार फिर आपस में चिपक गये ।
“अब तुम भी तो कुछ करो ।” मेरे होंठों ने उसके होंठों के कान में फुसफुसाया ।
“क्या ?” उसके होंठों ने मेरे होंठों के कान में फुसफुसाया ।

मैंने जवाब देने के स्थान पर उसकी हथेलियां पकड़ कर अपनी पैंट की बेल्ट पर रख दीं। उसके लिये यह नया अनुभव था।
“मुझे शर्म लगती है।”
“शर्म अपनी जगह और मजा अपनी जगह!” मैंने कहा और उसकी एक हथेली अपनी जींस के ऊपर से ही अपने फनफनाते हुए लंड के ऊपर खींच ली- फील करो इसे!
“वाओऽऽ!” उसके मुंह से निकला।
“तो आजाद करो इसे। और मजा आयेगा।”

उसने झिझकते हुए मेरी जींस की बेल्ट खोल दी। फिर बटन खोली और फिर चेन खींच दी। इस प्रक्रिया में उसकी उंगलियां मेरे लंड को सहला गयीं। वह शर्माकर फिर मुझसे चिपट गयी।
“उतारो तो इसे!” मैंने उसके हाथ खींच कर फिर अपनी जींस पर अटका दिये।
उसने सकुचाते हुए मेरी जींस मेरी कमर से नीचे खिसकाई। मैं धीरे से बेड के किनारे पर बैठ गया और उसने घुटनों के बल नीचे बैठते हुए जींस के दोनों पांयचे खींचते हुए जींस को मेरे शरीर से अलग करके एक ओर उछाल दिया।
“अब इसेऽऽ…” कहते हुए मैंने उसके अंगूठे अपने अंडरवियर की इलास्टिक में फंसा दिये। वह एक बार फिर शर्मा उठी।
एक बार सिर उठाकर मेरी आंखों में झांका, एक शर्मीली स्माइल दी और बोली- इट्स माई फर्स्ट चांस!
“माई टूऽऽऽ… लेट्स एन्जॉय इट!”

उसने शर्माकर अपना चेहरा मेरी गोद में रख दिया। अब उसके गाल मेरी लंड को स्पर्श कर रहे थे। लंड बेचारा क्या करता … फड़कने लगा। हम दोनों थोड़ी देर इसका आनंद लेते रहे। मैं उसके सिल्की बालों से खेलता रहा और वह अपने गाल पर, अंडरवियर के ऊपर से ही, मेरे लंड की शैतानियों का आनंद लेती रही।

फिर मैं खड़ा हो गया।
खड़े होने में उसका चेहरा घूमा और उसके होंठ मेरे लंड को छू गये।
“कम ऑन बेबी ऽऽऽ!” मैं ने रोमांटिक स्वर में कहा।
उसने एकबारगी ही अपनी आंखें भींचीं और झटके से इलास्टिक खींच दी। अंडरवियर आकर मेरी जांघों में अटक गया।
अंडरवियर नीचे खिंचने के साथ ही इलास्टिक के साथ ही मेरा तना हुआ लंड भी नीचे आया और फिर इलास्टिक से छूटते ही एक झटके से उसने उछाल भरी और पहले उसकी ठोड़ी फिर उसके होंठों को सहलाता हुआ उसकी नाक को चूमने लगा।

इस अचानक हमले से वह हड़बड़ा गयी। उसने घबराकर अपना सिर पीछे खींचा और फिर समझ आते ही मुस्कुरा उठी और फिर … फिर उसने धीरे से मेरे लपलपाते हुए नौ इंच के मोटे से लंड को अपने दोनों हाथों में भर लिया। लंड को देखकर वह जांघों में फंसे मेरे अंडरवियर को भूल गयी थी। मैंने भी उसे और अपने लंड को डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा, बस उंगलियों से थोड़ा सा इशारा दिया, पैरों को थोड़ी से हरकत दी और बेचारा अंडर वियर नीचे सरक गया। मैंने अपने पैर उससे आजाद किये और उसे एक ओर सरका दिया।

“वाओऽऽऽ!” वह आश्चर्य से मेरे लंड को अपने दोनों हाथों में भरे हुए देख रही थी- यह कम्बख्त इतना बड़ा होता है ?
“छोटा भी होता है। कोई-कोई इससे भी बड़ा होता है। हर तरह के होते हैं।” मैंने उसे समझाया।
“कितना प्यारा है ! नहीं ?” उसने प्यार से मेरे लंड के साथ खेलते हुए कहा।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया बस अपने लंड पर उसके हाथों की हरकत का आनंद लेता रहा। मुझसे किसी जवाब की उसे अपेक्षा थी नहीं थी। वह अपनी मस्ती और और अचानक हाथ

लगे उस खजाने के साथ मगन थी।
अब मेरा बदन भयंकर रूप से सनसनाने लगा था। यह सनसनाहट और बढ़ गयी जब उसने धीरे से अपने होंठ बढ़ाकर लण्ड के टोपे पर एक प्यारा सा चुम्बन जड़ दिया। मेरा सारा वजूद कांप गया।
“इसे लॉलीपॉप की तरह चूसो!” बरबस मेरे होंठों से शब्द कूद पड़े। मेरी आवाज खुद मुझे कराहट जैसी लग रही थी।
“नहीं ऽऽऽ!!!” उसकी आवाज जैसे किसी कुयें की तलहटी से आ रही थी।

कहानी जारी रहेगी.
sapnapaswan143@gmail.com

कहानी का अगला भाग : गर्लफ्रेंड के साथ मेरा पहला सेक्स-3

Other stories you may be interested in

कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-4

कम्मो तो मुझ पर अपना सब कुछ लुटाने, सबकुछ न्यौछावर करने को प्रस्तुत ही थी ; कमी तो मेरी तरफ से थी कि मैं इतनी बड़ी दिल्ली में कोई एकांत कोना नहीं तलाश पा रहा था. ऐसी बेबसी का सामना मुझे […]
Full Story >>>

ताऊ की लड़की को चोदा-1

दोस्तो, आप लोगों के मेल मैंने पढ़े, पढ़ कर बहुत खुशी हुई. आप लोगों ने मेरी पिछली कहानी हसीन चाची की चुत की चुदाई कर दी को बहुत सराहा, उसके लिए आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद. आज मैं आप […]
Full Story >>>

मेरी कमसिन जवानी की आग-4

मुझसे बोले राज अंकल- तू बता सोनू, तुझे कोई दिक्कत तो नहीं ? बस थोड़ी देर की बात होगी, अपन बीस पच्चीस मिनट में वापस आ जाएंगे. मैं उस समय किसी हालत में बस चुदवाना चाहती थी, मुझे दिमाग में कुछ […]
Full Story >>>

जवानी की प्यास : कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-3

फोन लेकर कम्मो बहुत खुश नजर आ रही थी. हम रेस्तरां के केबिन में बैठे थे. “अब तो खुश न ?” मैंने उससे कहा. “हां अंकल जी. थैंक यू” वो हंस कर बोली. “सिर्फ थैंक यू ? कंजूस कहीं की !” मैंने कहा. […]
Full Story >>>

ग्रुप सेक्स का ऑनलाइन मजा-1

नमस्कार, मैं सारिका आप सबका दिल से धन्यवाद देना चाहूंगी. आप सबने मेरी पिछली कहानियों को खूब सराहा और मुझे प्रेरित किया कि मैं अपनी एक और कहानी लिखूँ. ये मेरी हाल की ही एक घटना है.. जिसे मुझे लगा […]
Full Story >>>